International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 13, Issue 4, April 2026
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

बीकानेर राज्य में कर नीति और व्यापार नियंत्रण (1750–1818) : एक ऐतिहासिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण

लक्ष्मी देवी नंदा
शोधार्थी (इतिहास)
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

सारांश

यह शोध पत्र 1750 से 1818 ईस्वी के मध्य बीकानेर राज्य की कर नीति और व्यापार नियंत्रण व्यवस्था का ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक दृष्टिकोण से विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इस अवधि में मुग़ल साम्राज्य के पतन, मराठा प्रभाव के प्रसार, और क्षेत्रीय शक्तियों के उदय ने बीकानेर की आर्थिकी व प्रशासनिक संरचना पर गहरा प्रभाव डाला। कर नीति में पारंपरिक भू–राजस्व प्रणाली के साथ–साथ बाजार कर, सीमा शुल्क और व्यापारिक उपकर जैसी व्यवस्थाओं का विकास हुआ। व्यापार नियंत्रण में स्थानीय मंडियों का नियमन, आयात–निर्यात की शर्तें, और माल–भाड़ा नियंत्रण जैसी नीतियां शामिल थीं। इस शोध में archival records, शाही आदेश, और समकालीन यात्रा–वृत्तांतों का उपयोग करते हुए, कर व्यवस्था की निरंतरता और उसमें आए परिवर्तनों की पहचान की गई है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस काल में कर एवं व्यापार नीति केवल राजस्व वृद्धि का साधन नहीं, बल्कि राजनीतिक स्थिरता और प्रशासनिक नियंत्रण का भी महत्वपूर्ण उपकरण थी।

मुख्य शब्द' बीकानेर राज्य, कर नीति, व्यापार नियंत्रण, ऐतिहासिक विश्लेषण, प्रशासनिक दृष्टिकोण, भू–राजस्व, सीमा शुल्क, मंडी नियमन, 18वीं सदी, राजस्थान इतिहास।

प्रस्तावना

बीकानेर राज्य 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजस्थान की राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित हुआ। 1750 से 1818 का कालखंड भारतीय इतिहास में एक संक्रमण काल था। इस समय तक मुग़ल साम्राज्य का राजनीतिक और सैन्य प्रभाव लगभग समाप्त हो चुका था। दिल्ली के दरबार का नाम मात्र का अस्तित्व रह गया था और क्षेत्रीय राज्यों को अपने प्रशासनिक एवं आर्थिक निर्णय स्वतंत्र रूप से लेने पड़े। बीकानेर, जो पहले लंबे समय तक मुग़ल सत्ता का सहयोगी रहा था, अब अपनी रक्षा और आर्थिक स्थिरता के लिए स्वायत्त नीतियाँ बनाने लगा। यही कारण है कि इस काल में कर नीति और व्यापार नियंत्रण केवल राजस्व का स्रोत नहीं रहे, बल्कि राजनीतिक अस्तित्व और स्थिरता का मुख्य आधार बन गए।

1750 के बाद बीकानेर राज्य को दोहरी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। एक ओर आंतरिक रूप से कृषि उत्पादन सीमित होने और बार–बार पड़ने वाले अकाल ने आर्थिक स्थिति को अस्थिर किया, दूसरी ओर बाहरी स्तर पर मराठा शक्ति ने राजस्थान पर निरंतर दबाव बनाया। मराठों की चौथ और चढ़ावे की माँगों ने बीकानेर की वित्तीय स्थिति को कमजोर कर

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

दिया। इस परिस्थिति से निपटने के लिए कर नीति में नए प्रावधान किए गए। परंपरागत भू–राजस्व प्रणाली को बनाए रखते हुए इजारेदारी पद्धति का विस्तार किया गया, जिससे राज्य को तत्काल नकदी आय प्राप्त हो सके। साथ ही मंडी शुल्क, सीमा कर और आयात–निर्यात उपकर को व्यवस्थित कर व्यापार को राजस्व का स्थायी स्रोत बनाने का प्रयास किया गया। किंतु इन नीतियों का भार किसानों और व्यापारियों पर अधिक पड़ा, जिससे असंतोष भी बढ़ा।

व्यापार नियंत्रण की दृष्टि से बीकानेर की भौगोलिक स्थिति उसे अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती थी। गुजरात से पंजाब और दिल्ली जाने वाले व्यापारिक मार्ग बीकानेर से होकर गुजरते थे। इस कारण यहाँ की मंडियाँ न केवल स्थानीय व्यापार बल्कि अंतर–क्षेत्रीय व्यापार का भी केंद्र बनीं। प्रशासन ने इन मंडियों पर कठोर नियंत्रण रखा, व्यापारियों से मंडी शुल्क वसूला और मार्गों पर चौकियाँ व सराय स्थापित कर व्यापारिक काफ़िलों को सुरक्षा प्रदान की। इस व्यवस्था से राज्य को स्थायी आय प्राप्त हुई और राजनीतिक प्रभाव भी बढ़ा। किंतु मराठों के आक्रमण, डकैतियों और पड़ोसी रियासतों से अस्थिर संबंधों के कारण व्यापारिक गतिविधियाँ कई बार बाधित भी हुईं।

1818 तक पहुँचते–पहुँचते अंग्रेज़ ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव राजस्थान में महसूस होने लगा। अंग्रेज़ों ने मराठों और अन्य रियासतों के साथ संधियाँ कर उत्तर भारत की राजनीति में अपनी पैठ बनानी शुरू कर दी थी। बीकानेर शासकों को अब नीतियाँ बनाते समय इस नई शक्ति को ध्यान में रखना पड़ा। इस काल में कर और व्यापार नियंत्रण की नीतियाँ बीकानेर की राजनीतिक कूटनीति का भी हिस्सा बन गईं।

इस प्रकार 1750 से 1818 तक बीकानेर राज्य की कर नीति और व्यापार नियंत्रण को केवल राजस्व संग्रह की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। ये नीतियाँ प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने, आंतरिक विद्रोहों को नियंत्रित करने, बाहरी दबावों से रक्षा करने और राजनीतिक अस्तित्व बनाए रखने के लिए भी आवश्यक थीं। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य इन्हीं नीतियों का ऐतिहासिक एवं प्रशासनिक विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि बीकानेर राज्य ने कैसे परंपरागत व्यवस्थाओं की निरंतरता बनाए रखते हुए समय की माँग के अनुसार परिवर्तन भी किए। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बीकानेर की कर और व्यापार व्यवस्था परंपरा और नवाचार का संतुलित संगम थी, जिसने राज्य के अस्तित्व और स्थिरता की गारंटी दी।

बीकानेर राज्य की राजनीतिक पृष्ठभूमि (1750–1818)

1750 से 1818 तक का समय बीकानेर राज्य की राजनीति के लिए अत्यंत चुनौतीपूर्ण और संक्रमणकारी रहा। यह काल न तो पूर्णतः मुग़ल साम्राज्य के संरक्षण का था और न ही अंग्रेज़ों के स्थायी प्रभुत्व का, बल्कि यह वह दौर था जब मराठा शक्ति का वर्चस्व राजस्थान की रियासतों पर लगातार दबाव बना रहा और अंग्रेज़ ईस्ट इंडिया कंपनी धीरे–धीरे उत्तर भारत की राजनीति में हस्तक्षेप करने लगी। इन सब परिस्थितियों के बीच बीकानेर को अपने अस्तित्व और स्थिरता बनाए रखने के लिए कई कठिन निर्णय लेने पड़े।

1750 के बाद तक आते–आते मुग़ल साम्राज्य नाम मात्र का रह गया था। दिल्ली का सम्राट प्रतीकात्मक था और उसका राजनीतिक प्रभाव राजपूताना तक पहुँचने में असमर्थ था। मुग़ल दरबार से संरक्षण समाप्त होने के कारण बीकानेर को अपने बलबूते पर प्रशासन और सुरक्षा सुनिश्चित करनी पड़ी। अब राज्य को अपनी कर नीति और व्यापार नियंत्रण को इस प्रकार संचालित करना पड़ा, जिससे राजकोष मज़बूत हो और बाहरी दबावों का सामना किया जा सके।

मराठों का प्रभाव इस काल की राजनीति में सबसे बड़ा संकट था। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मराठों ने राजस्थान की रियासतों पर लगातार चढ़ाई की और चौथ (कर)

तथा नजराने वसूल किए। बीकानेर राज्य भी इस दबाव से अछूता नहीं रहा। मराठों को भारी धनराशि चढ़ावे के रूप में देनी पड़ती थी, जिसके लिए अक्सर राज्य को किसानों और व्यापारियों पर अतिरिक्त कर लगाना पड़ता। यह बोझ राजकोषीय संकट और जन असंतोष दोनों का कारण बना।

पड़ोसी रियासतों के साथ बीकानेर के संबंध भी इस काल में उतार–चढ़ाव भरे रहे। कभी जोधपुर और जयपुर जैसे राज्यों से सहयोग मिला, तो कभी संघर्ष की स्थिति बनी। विशेषकर जोधपुर–बीकानेर के बीच शक्ति संतुलन और क्षेत्रीय राजनीति में वर्चस्व की प्रतिस्पर्धा ने बीकानेर को कई बार कठिन परिस्थिति में डाल दिया। इसी प्रकार जैसलमेर और अन्य छोटे पड़ोसी राज्यों के साथ भी संबंधों में तनाव और सहयोग दोनों की स्थिति देखने को मिली।

आंतरिक स्तर पर बीकानेर के शासकों को जागीरदारों और सामंतों की शक्तियों को संतुलित करना पड़ा। जागीरदार, जिन्हें भूमि पर अधिकार और कर वसूली का अधिकार दिया गया था, कई बार स्वायत्त रूप से कार्य करने लगते थे। इससे शाही अधिकार को चुनौती मिलती और प्रशासनिक अस्थिरता उत्पन्न होती। शासकों को इनके विरुद्ध कठोर कदम उठाने पड़ते, या फिर राजनीतिक समझौते करने पड़ते।

1800 के बाद की स्थिति में अंग्रेज़ ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रभाव भी राजस्थान तक पहुँचने लगा। यद्यपि 1818 तक बीकानेर पर अंग्रेज़ों का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित नहीं हुआ था, किंतु जयपुर और जोधपुर जैसी रियासतों के साथ हुई अंग्रेज़ी संधियों का असर बीकानेर की राजनीति पर भी पड़ा। शासकों को समझ आने लगा कि आने वाला समय अंग्रेज़ शक्ति का है और भविष्य में उनकी नीतियों का अनुसरण करना ही विवेकपूर्ण होगा।

इस प्रकार 1750 से 1818 तक बीकानेर की राजनीतिक पृष्ठभूमि अस्थिरता, बाहरी दबाव और आंतरिक चुनौतियों से भरी रही। मुग़ल साम्राज्य का पतन, मराठों का निरंतर दबाव, पड़ोसी रियासतों के साथ संघर्ष और अंग्रेज़ों का बढ़ता प्रभाव–इन सभी ने मिलकर बीकानेर राज्य को अपनी नीतियों में लगातार परिवर्तन करने पर विवश किया। यही कारण है कि इस काल में कर नीति और व्यापार नियंत्रण केवल आर्थिक साधन न रहकर राजनीतिक अस्तित्व और प्रशासनिक स्थिरता का भी मुख्य आधार बन गए।

कर नीति की संरचना और विकास

बीकानेर राज्य की आर्थिकी और प्रशासनिक स्थिरता का मुख्य आधार कर नीति थी। 18वीं शताब्दी के राजनीतिक अस्थिरता भरे दौर में जब बाहरी आक्रमण, मराठों का दबाव और आंतरिक विद्रोह सामान्य हो गए थे, तब राज्य की वित्तीय सुरक्षा के लिए राजस्व नीतियों का व्यवस्थित विकास अनिवार्य हो गया। 1750 से 1818 तक बीकानेर की कर व्यवस्था ने पारंपरिक ढाँचे को बनाए रखते हुए नए–नए प्रयोग भी किए।

1. भू–राजस्व प्रणाली

बीकानेर की कर नीति का सबसे बड़ा और स्थायी आधार भू–राजस्व था।

* **खालसा भूमिः** राज्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण में रहने वाली भूमि से सीधे राजस्व वसूला जाता था। इसके लिए राजस्व अधिकारियों, कामदार, हुवालदार और चौधरी–पटेलों की नियुक्ति की जाती थी।
* **जागीर व्यवस्थाः** प्रमुख सरदारों और सामंतों को सैन्य सेवा और निष्ठा के बदले भूमि दी जाती थी, जिनसे वे राजस्व वसूलकर अपना निर्वाह करते थे।
* **कुंता प्रणालीः** राज्य में कुंता प्रणाली का प्रचलन सबसे पहले हुआ जब से प्रशासन कृषि के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित होने लगा तब से इस प्रणाली का प्रयोग किया गया। इसके अनुसार हासल (भू राजस्व) का निर्धारण राज्य का कामदार या 'हुवालदार' एक

अन्य अधिकारी 'सहाणा' की सहायता से खड़ी फसल के उत्पादन को आंकता या कूंतता था तथा कुल उत्पादन को निर्धारित करता था।

* **इजारेदारी पद्धतिः** कई बार राजस्व वसूली ठेके पर दी जाती थी। इजारेदार निश्चित धनराशि राज्य को देकर कर वसूलता और अतिरिक्त राशि स्वयं रख लेता। यह पद्धति राजकोष को तात्कालिक लाभ पहुँचाती, परंतु किसानों पर अत्यधिक बोझ डालती थी।

इस प्रणाली का उद्देश्य कृषि से अधिकतम राजस्व प्राप्त करना था, किंतु मरुस्थलीय क्षेत्र होने के कारण कृषि उत्पादन सीमित था, इसलिए कराधान का अनुपात अक्सर किसानों के लिए कठोर सिद्ध होता था।

2. व्यापार एवं मंडी कर

बीकानेर की भौगोलिक स्थिति उसे व्यापारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बनाती थी। गुजरात, पंजाब, दिल्ली और सिंध की ओर जाने वाले व्यापारिक मार्ग यहाँ से गुजरते थे।

* प्रत्येक मंडी पर विशेष कर लगाया जाता था, जिसे मंडी शुल्क कहा जाता था।
* खुदरा विक्रेताओं और थोक व्यापारियों से अलग–अलग दरों पर कर वसूला जाता।
* स्थानीय उत्पादन (अनाज, ऊन, नमक, कपड़ा) पर अपेक्षाकृत कम कर, जबकि बाहर से आए माल पर अधिक कर लगाया जाता, ताकि स्थानीय उत्पाद को बढ़ावा मिले।

3. सीमा शुल्क और आयात–निर्यात उपकर

बीकानेर में प्रवेश करने वाले सभी व्यापारिक माल पर सीमा कर (Octroi / Chungi) लगाया जाता था।

* व्यापारिक शुल्कों में सबसे महत्त्वपूर्ण शुल्क जगात था। जगात मुख्य रूप से राज्य में बाहर से आने वाली, बाहर जाने वाली तथा राज्य से गुजरने वाली व बिकने वाली वस्तुओं पर वसूल की जाती थी। वस्तुतः यह सीमा शुल्क, आयात– निर्यात कर तथा चुंगी कर का सामूहिक नाम था।
* ऊँटों, बैलगाड़ियों और कारवाँ से माल की मात्रा के अनुसार कर वसूला जाता।
* विदेशी व्यापार (विशेषकर सिंध और पंजाब से आने वाले माल) पर निर्यात– आयात उपकर लगाया जाता था।

इस व्यवस्था से बीकानेर राजकोष को अतिरिक्त आय होती और व्यापार पर राज्य का नियंत्रण बना रहता।

4. कर वसूली की प्रक्रिया और प्रशासनिक नियंत्रण

कर वसूली के लिए राज्य ने एक संगठित तंत्र विकसित किया था।

* पटेल और मुकद्दम गाँव स्तर पर कर संग्रहण के लिए जिम्मेदार थे।
* राजस्व अधिकारी (कचहरी और दरबार के कर्मचारी) वसूली की देखरेख करते।
* सैन्य खर्च और मराठों को दिए जाने वाले नजराने के कारण कर की दरें अक्सर बढ़ा दी जाती थीं।
* कर बकाया रहने पर किसानों और व्यापारियों की संपत्ति जब्त की जाती या उन्हें ऋण लेकर कर चुकाने को विवश किया जाता।

5. कर नीति का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

* किसानों पर कर का भार बढ़ने से अक्सर असंतोष फैलता और कई बार पलायन की स्थिति भी उत्पन्न होती।
* व्यापारियों पर मंडी शुल्क और सीमा कर का बोझ था, किंतु उन्हें सुरक्षा और व्यापारिक मार्गों पर संरक्षण भी मिलता था।
* कर नीति ने राज्य के राजकोष को स्थायित्व तो दिया, परंतु आम जनता पर इसका बोझ अपेक्षाकृत अधिक था।

6. निरंतरता और परिवर्तन

1750–1818 के दौरान बीकानेर की कर नीति में एक ओर परंपरागत भू–राजस्व प्रणाली बनी रही, वहीं दूसरी ओर नए प्रकार के कर जैसे मंडी शुल्क, सीमा कर और आयात–निर्यात उपकर अधिक महत्त्वपूर्ण होते गए। यह परिवर्तन बाहरी दबावों (मराठा चौथ, अंग्रेज़ प्रभाव) और आंतरिक आवश्यकताओं (सैन्य व प्रशासनिक व्यय) के परिणामस्वरूप हुआ।

निष्कर्षतः बीकानेर राज्य की कर नीति की संरचना और विकास यह दर्शाता है कि 18वीं शताब्दी में राजस्व केवल आर्थिक साधन नहीं, बल्कि राजनीतिक अस्तित्व और प्रशासनिक नियंत्रण का मूल आधार था। इस काल की कर व्यवस्था में निरंतरता और परिवर्तन दोनों के तत्व दिखाई देते हैं–निरंतरता पारंपरिक भू–राजस्व में और परिवर्तन व्यापार एवं सीमा शुल्क की नीतियों में।

व्यापार नियंत्रण की नीतियां

बीकानेर राज्य की आर्थिकी केवल कृषि पर आधारित नहीं थी, क्योंकि मरुस्थलीय भौगोलिक परिस्थितियों के कारण उत्पादन सीमित था। अतः व्यापार यहाँ की आर्थिक जीवनरेखा बना। बीकानेर की भौगोलिक स्थिति उसे दिल्ली, पंजाब, सिंध और गुजरात को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्गों पर एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बनाती थी। 1750 से 1818 के बीच बदलते राजनीतिक परिदृश्य–मुग़ल साम्राज्य का पतन, मराठा दबाव और अंग्रेज़ी शक्ति का उदय–ने व्यापार नियंत्रण की नीतियों को भी प्रभावित किया। इस काल में व्यापार न केवल राजस्व का स्रोत रहा, बल्कि राजनीतिक और प्रशासनिक नियंत्रण का साधन भी बना।

1. स्थानीय बाजार और मंडी व्यवस्थाएँ

बीकानेर राज्य ने अपने भीतर के स्थानीय बाजारों (मंडियों) को नियंत्रित करने के लिए विशेष व्यवस्थाएँ अपनाईं।

* प्रत्येक मंडी में राज्य के अधिकारी (बाजार अमीन, चौकीदार) नियुक्त किए जाते थे, जो माप–तौल, कर वसूली और अनुशासन पर निगरानी रखते।
* मंडी शुल्क (Market tax) अनिवार्य था, जिसमें अनाज, कपड़ा, ऊन, नमक और शिल्प वस्तुओं पर कर लगाया जाता।
* स्थानीय उत्पादों पर कर अपेक्षाकृत कम और बाहरी व्यापारिक वस्तुओं पर अधिक रखा जाता, ताकि स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिले।

2. व्यापारिक मार्ग और सराय प्रणाली

बीकानेर राज्य की समृद्धि का प्रमुख कारण उसका व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण था।

* गुजरात से पंजाब और दिल्ली की ओर जाने वाले व्यापारी काफ़िले बीकानेर होकर गुजरते थे।
* इन मार्गों पर सराय (विश्रामगृह) और चौकियाँ (चौकीदारों की टुकड़ी) स्थापित की गईं। इससे व्यापारियों को सुरक्षा और ठहरने की सुविधा मिलती थी।
* बदले में व्यापारी राज्य को मार्ग शुल्क (Transit duty) अदा करते।
* व्यापार मार्गों पर यह नियंत्रण राज्य को अतिरिक्त राजस्व और राजनीतिक प्रभाव दोनों प्रदान करता था।

3. आयात–निर्यात नियमन एवं प्रतिबंध

बीकानेर में आयात और निर्यात पर नियंत्रण के लिए विशेष नीतियाँ बनाई गईं।

* **आयात वस्तुएँ:** कपड़ा, मसाले, धातु और विलास वस्तुओं पर ऊँचा कर लगाया जाता।
* **निर्यात वस्तुएँ:** ऊन, नमक, अनाज और पशु उत्पाद प्रमुख निर्यात वस्तुएँ थीं। राज्य इन पर अपेक्षाकृत हल्का कर रखकर निर्यात को प्रोत्साहित करता।
* कई बार राजनीतिक कारणों से पड़ोसी रियासतों के साथ व्यापार पर प्रतिबंध भी लगाया जाता, विशेषकर जब संबंध तनावपूर्ण हों।

4. मूल्य नियंत्रण और माप–तौल व्यवस्था

व्यापार नियंत्रण का एक महत्त्वपूर्ण पहलू मूल्य स्थिरीकरण और माप–तौल की एकरूपता थी।

* राज्य द्वारा निर्धारित सेर, तोला, गज जैसे मानक लागू किए जाते।
* मंडियों में व्यापारी मनमाना भाव न लगा सकें, इसके लिए अधिकारी नियुक्त रहते।
* अकाल या संकट के समय राज्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति नियंत्रित करता और कृत्रिम मूल्य वृद्धि को रोकने का प्रयास करता।

5. व्यापारियों को संरक्षण और सुविधाएँ

व्यापार को बढ़ावा देने के लिए बीकानेर राज्य ने व्यापारियों को कुछ सुविधाएँ भी दीं।

* प्रमुख व्यापारी वर्गों (मारवाड़ी, महाजन, बनिया) को ऋण और सुरक्षा उपलब्ध कराई जाती।
* व्यापारिक काफ़िलों को डकैतों और हमलावरों से सुरक्षा दी जाती।
* कभी–कभी व्यापारियों को विशेषाधिकार (जैसे कम कर या शुल्क से छूट) भी प्रदान की जाती।

6. राजनीतिक और प्रशासनिक प्रभाव

व्यापार नियंत्रण की नीतियाँ केवल आर्थिक ही नहीं थीं, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण थीं।

* व्यापारिक मार्गों पर नियंत्रण से बीकानेर की राजनीतिक प्रतिष्ठा बढ़ती थी।
* व्यापारियों और स्थानीय सरदारों को कर और व्यापारिक लाभ बाँटकर राज्य ने आंतरिक प्रशासन को स्थिर बनाए रखा।
* बाहरी दबाव (विशेषकर मराठों और अंग्रेज़ों का) बढ़ने पर व्यापार नियंत्रण और अधिक कठोर किया गया।

1750 से 1818 तक बीकानेर राज्य की व्यापार नियंत्रण नीतियों ने राज्य की आर्थिकी को स्थायित्व प्रदान किया। मंडी व्यवस्था, व्यापारिक मार्गों का नियमन, आयात–निर्यात पर कर और मूल्य नियंत्रण जैसी नीतियाँ केवल राजस्व वृद्धि का साधन नहीं थीं, बल्कि राजनीतिक और प्रशासनिक स्थिरता की गारंटी भी थीं। इस प्रकार व्यापार नियंत्रण बीकानेर राज्य की जीवनरेखा था जिसने बदलते राजनीतिक परिदृश्य में राज्य को टिकाए रखा।

प्रशासनिक दृष्टिकोण से विश्लेषण

बीकानेर राज्य की कर नीति और व्यापार नियंत्रण व्यवस्था को यदि प्रशासनिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि इन नीतियों का स्वरूप केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं था, बल्कि वे शासन तंत्र की स्थिरता, सामाजिक नियंत्रण और राजनीतिक संरक्षण का भी आधार थीं। इस काल में बीकानेर को बाहरी दबाव (मुग़लों का क्षय, मराठों का दबाव और अंग्रेज़ों का उदय) तथा आंतरिक चुनौतियाँ (किसानों का असंतोष, व्यापारियों की

शिकायतें, सरदारों की शक्तियाँ) दोनों का सामना करना पड़ा। इन परिस्थितियों में प्रशासन ने कर और व्यापार से जुड़ी नीतियों को एक ऐसे तंत्र के रूप में विकसित किया, जिसने राज्य की वित्तीय रीढ़ को मज़बूत किया और शासन की निरंतरता को बनाए रखा।

राजस्व प्रशासन की संरचना इस प्रकार बनाई गई थी कि सत्ता का नियंत्रण शासक और दरबार के हाथ में रहे। राजा सर्वोच्च नीति निर्माता था, जबकि दीवान या वज़ीर वित्तीय मामलों का प्रत्यक्ष संचालन करते थे। उनके अधीन कचहरी अमल, राजस्व अधिकारी और गाँव स्तर पर पटेल–मुकद्दम कार्य करते थे। यह केंद्रीकृत प्रणाली होने के साथ–साथ विकेंद्रीकरण की झलक भी देती थी, क्योंकि स्थानीय सरदारों और जागीरदारों को कर वसूली में हिस्सेदारी दी जाती थी। इससे प्रशासन को स्थानीय स्तर पर सहयोग मिलता, किंतु कभी–कभी जागीरदार अपने स्वार्थ के लिए कर वसूली में मनमानी भी करते।

व्यापार नियंत्रण की दृष्टि से प्रशासन ने मंडियों, मार्गों और माप–तौल पर कठोर निगरानी रखी। प्रत्येक मंडी में अमीन और चौकीदार नियुक्त थे जो कर वसूली और मूल्य नियंत्रण देखते। व्यापारिक मार्गों पर चौकियाँ और सराय स्थापित कर व्यापारियों को सुरक्षा दी गई। इस प्रकार प्रशासन ने व्यापार को सुरक्षित बनाकर उससे मिलने वाले राजस्व को स्थायी स्रोत बनाया। किंतु प्रशासनिक कठोरता और अधिक कर दरों के कारण किसानों और व्यापारियों के बीच असंतोष भी पनपता रहा।

इस काल का प्रशासन कई बार भ्रष्टाचार और अपव्यय की समस्या से भी जूझता रहा। इजारेदारों द्वारा अत्यधिक कर वसूली और अधिकारियों की मिलीभगत से राजस्व का बड़ा हिस्सा दरबार तक पहुँचने से पहले ही हड़प लिया जाता। इस समस्या से निपटने के लिए शासक समय–समय पर निरीक्षण, अधिकारियों का स्थानांतरण और मंडियों में प्रत्यक्ष नियंत्रण जैसे सुधारात्मक कदम उठाते। यह दर्शाता है कि प्रशासन अपनी खामियों को समझकर उनमें सुधार करने का प्रयास करता रहा।

प्रशासनिक दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह था कि कर और व्यापार नीतियाँ केवल आय का साधन नहीं थीं, बल्कि वे सामाजिक अनुशासन और राजनीतिक नियंत्रण के औजार भी थीं। कर व्यवस्था ने राज्य को सेना और प्रशासन चलाने के लिए साधन दिए, वहीं व्यापार नियंत्रण ने राज्य को बाहरी शक्तियों के दबाव के बीच अपनी स्थिति बनाए रखने में मदद की। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि 1750 से 1818 तक बीकानेर राज्य का प्रशासन कर और व्यापार नीतियों पर ही टिका हुआ था, और इन्हीं के माध्यम से उसने अपने अस्तित्व को बनाए रखा।

निरंतरता और परिवर्तन

बीकानेर राज्य की कर नीति और व्यापार नियंत्रण का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि 1750 से 1818 तक की अवधि में इसमें एक ओर परंपरागत तत्वों की निरंतरता बनी रही, वहीं दूसरी ओर समय की माँग और परिस्थितियों के दबाव में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन भी हुए। यह काल मुग़ल साम्राज्य के पतन, मराठों की आक्रामकता, पड़ोसी रियासतों के साथ प्रतिस्पर्धा और अंग्रेज़ों के प्रभाव के आरंभिक दौर से जुड़ा हुआ था। इस बहुआयामी परिप्रेक्ष्य ने बीकानेर की नीतियों को प्रभावित किया।

कर नीति में सबसे बड़ी निरंतरता भू–राजस्व की प्रधानता थी। बीकानेर जैसे मरुस्थलीय राज्य के लिए कृषि उत्पादन सीमित होने के बावजूद भूमि कर ही राजकोष की रीढ़ बना रहा। खालसा भूमि से सीधे राजस्व वसूला जाता और जागीर व्यवस्था के माध्यम से सामंतों की निष्ठा और सैन्य सहयोग प्राप्त किया जाता। गाँव स्तर पर पटेल, मुकद्दम और चौधरी जैसे पारंपरिक अधिकारी कर वसूली और राजस्व संधारण का काम करते रहे। इसी प्रकार व्यापारिक

मार्गों पर शुल्क वसूलने की परंपरा भी बनी रही, क्योंकि बीकानेर की भौगोलिक स्थिति उसे सदैव व्यापारिक केंद्र बनाए रखती थी।

किन्तु इन निरंतरताओं के साथ–साथ परिवर्तन भी उतने ही स्पष्ट हैं। 18वीं शताब्दी में इजारेदारी प्रणाली का विस्तार हुआ, जिसके अंतर्गत कर वसूली ठेके पर दी जाने लगी। यह प्रणाली तत्काल राजस्व उपलब्ध कराने में सहायक थी, किंतु किसानों पर कर बोझ और बढ़ा देती थी। इसी काल में मंडी शुल्क, सीमा कर और आयात–निर्यात उपकर जैसी व्यवस्थाओं का विकास हुआ। मराठों को चौथ देने और अंग्रेज़ों के बढ़ते प्रभाव के कारण राजकोषीय दबाव बढ़ा, जिससे कर की दरें ऊँची की गईं। व्यापार नियंत्रण के क्षेत्र में भी नए आयाम जुड़े–जैसे मंडी शुल्क का अधिक व्यवस्थित विस्तार, बाहरी वस्तुओं पर कठोर सीमा शुल्क, आवश्यक वस्तुओं पर मूल्य नियंत्रण और संकटकाल में आपूर्ति पर निगरानी।

इस प्रकार यह काल परंपरा और परिवर्तन के संगम का प्रतीक रहा। निरंतरता ने बीकानेर को प्रशासनिक स्थिरता प्रदान की, जबकि परिवर्तन ने उसे बदलते राजनीतिक और आर्थिक वातावरण में जीवित रहने की क्षमता दी। परंपरागत भू–राजस्व और मंडी नियंत्रण ने राज्य को जड़ों से जोड़े रखा, वहीं इजारेदारी, सीमा शुल्क और आयात–निर्यात नीतियों जैसे नवाचारों ने उसे समय की चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाया। इसलिए कहा जा सकता है कि बीकानेर की कर एवं व्यापार व्यवस्था 1750 से 1808 के बीच न तो पूर्णतया स्थिर रही और न ही पूरी तरह बदल गई, बल्कि इसमें निरंतरता और परिवर्तन दोनों का संतुलित समावेश दिखाई देता है।

निष्कर्ष और सुझाव

बीकानेर राज्य की कर नीति और व्यापार नियंत्रण व्यवस्था का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि 1750 से 1818 तक का काल केवल आर्थिक नीतियों का ही नहीं, बल्कि प्रशासनिक और राजनीतिक संघर्षों का भी दौर था। इस समय मुग़ल साम्राज्य का पतन हो रहा था, मराठों की चौथ और दबाव बढ़ रहा था और धीरे–धीरे अंग्रेज़ों का प्रभाव भी दिखाई देने लगा था। इन परिस्थितियों में बीकानेर राज्य ने अपनी कर और व्यापार नीतियों को एक संतुलित रूप में ढालने का प्रयास किया। भूमि से मिलने वाला भू–राजस्व इस पूरे काल में राज्य की वित्तीय रीढ़ बना रहा, जबकि व्यापारिक मार्गों से शुल्क वसूलने, मंडी शुल्क और सीमा कर जैसी व्यवस्थाओं ने राजकोष को अतिरिक्त मजबूती दी। इस निरंतरता के साथ–साथ इजारेदारी प्रणाली, मूल्य नियंत्रण, आयात–निर्यात कर और व्यापारिक नियमन जैसे परिवर्तन भी किए गए, जिन्होंने बदलती परिस्थितियों में राज्य को सहारा दिया।

प्रशासनिक दृष्टि से देखा जाए तो यह नीतियाँ केवल राजस्व जुटाने का साधन नहीं थीं, बल्कि सामाजिक नियंत्रण और राजनीतिक स्थिरता का भी आधार थीं। किसानों और व्यापारियों पर अधिक कर बोझ से असंतोष की स्थिति बनी, किंतु व्यापारिक मार्गों पर सुरक्षा और मंडियों में व्यवस्था ने उन्हें राज्य से जोड़े रखा। प्रशासन में भ्रष्टाचार और इजारेदारों की कठोरता जैसी समस्याएँ भी रहीं, जिनसे निपटने के लिए समय–समय पर सुधारात्मक कदम उठाए गए। यह दर्शाता है कि बीकानेर का शासन तंत्र अपनी कमजोरियों को समझते हुए उन्हें सुधारने का प्रयास करता रहा।

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि बीकानेर राज्य की कर और व्यापार नीतियाँ परंपरा और परिवर्तन दोनों का मिश्रण थीं। भू–राजस्व और मंडी नियंत्रण जैसी व्यवस्थाएँ पुरानी परंपरा को दर्शाती हैं, जबकि इजारेदारी, सीमा शुल्क और मूल्य नियंत्रण बदलते समय की माँग के अनुरूप अपनाए गए नवाचार थे। इन नीतियों ने न केवल राजकोष को स्थिर रखा, बल्कि राजनीतिक दबावों और बाहरी चुनौतियों के बीच राज्य के अस्तित्व को भी बनाए रखा।

भविष्य की नीति और सुधार की दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि कराधान को संतुलित रखना आवश्यक था, ताकि किसानों और व्यापारियों पर अत्यधिक बोझ न पड़े। व्यापारिक मार्गों और मंडियों को अधिक प्रोत्साहित करके राज्य और सशक्त हो सकता था। प्रशासनिक पारदर्शिता और भ्रष्टाचार पर अंकुश भी इस काल की सबसे बड़ी ज़रूरत थी। साथ ही, अकाल और संकट के समय मूल्य नियंत्रण और आपूर्ति प्रबंधन को और प्रभावी बनाना चाहिए था, जिससे आम जनता को राहत मिल सके।

समग्रतः 1750 से 1818 तक का काल बीकानेर की आर्थिक नीतियों में निरंतरता और परिवर्तन का अनूठा संगम था। यह नीतियाँ न केवल तत्कालीन परिस्थितियों का समाधान थीं, बल्कि उन्होंने दीर्घकालिक ऐतिहासिक महत्त्व भी अर्जित किया। यही कारण है कि तमाम संकटों और बाहरी दबावों के बावजूद बीकानेर राज्य अपनी पहचान बनाए रखने और प्रशासनिक स्थिरता कायम रखने में सफल रहा

संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. सी. (1990). भारतीय संवैधानिक विकास और राष्ट्रीय आंदोलन. नई दिल्ली : एस. चाँद एंड कंपनी।
2. चंद्र, सतीश. (2005). मध्यकालीन भारत : सुल्तनत से मुग़ल साम्राज्य तक (1526–1748) (खंड 2). नई दिल्लीः हर–आनंद प्रकाशन।
3. गुप्ता, के. एस. (1987). राजस्थान का आर्थिक इतिहास. जयपुर : पब्लिकेशन स्कीम।
4. हबीब, इरफ़ान. (1963). मुग़ल भारत की कृषक व्यवस्था : 1556–1707. बंबई– एशिया पब्लिशिंग हाउस।
5. हुसैन, एस. ए. (2004). राजस्थान : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. जयपुर : आर. बी. एस. ए. पब्लिशर्स।
6. मिश्रा, एस. (1997). मराठों का उत्कर्ष और अठारहवीं शताब्दी का क्षेत्रीय राजनीति पर प्रभाव. नई दिल्ली : मनोहर पब्लिशर्स।
7. शर्मा, जी. एन. (1962). मध्यकालीन राजस्थान का सामाजिक जीवन (1500–1800). आगरा : आगरा विश्वविद्यालय प्रेस।
8. शर्मा, लक्ष्मी नारायण. (2001). राजपूताना रियासतों की आर्थिक संरचना. जयपुरः आलेख पब्लिशर्स।
9. सिंह, हरबंस. (1985). राजस्थान का इतिहास : मध्यकालीन काल. जोधपुरः रीमा पब्लिशिंग हाउस।
10. सिंह, एन. के. (2004). राजस्थान थ्रू द एजेस (खंड III–IV). जयपुर : राजस्थान स्टेट आर्काइव्स।
11. टॉड, जेम्स. (1829/1920). राजस्थान की अन्नाल्स एंड एंटिक्विटीज (खंड 2). लंदन : स्मिथ, एल्डर एंड कंपनी/पुनर्मुद्रण, दिल्ली : लो प्राइस पब्लिकेशन्स।
12. देवड़ा, जी.एस.एल. : राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था, 1981, बीकानेर।